AMDSC-5 "Indian Traditional Music"

(Additional Multi Disciplinary Skill Course)

Credit: 2

For UG COURSE (III / IV Semester) UNDER NEP-2020

Objective:

The aim of the course is to aware students with the fundamental aspects of Indian Traditional Music (Classical & Folk). This course provides the basic ideas and concepts of Traditional Music System of India. Students will get knowledge about Basic Theory & grammatical terminology of Indian classical& folk music.

(**Note:-There will be Three Unit (I-III) of Theory and fourth(IV) Unit of Practical)**
Course Raga :-Bilawal, Yaman, Bhairav, Bhupali

Unit I:-Fundamental of Indian Music

(A) Study of the following: -
Sangeet, Naad & its Properties, Shruti, Swar, Saptak , Alankaar, Taan, Taal, Aroh, Avroh, Pakad, Raag, Jati, Vadi, Samvadi, Anuvadi, Vivadi.

(B) Study of Course: Raga & Theoretical knowledge of **Alankar**, **Swarmalika & Lakshan Geet** in Course ragas.

Unit II :- The Basic Knowledge of Instruments & Study of Taal :-

(A) Introduction & Structure of **Tanpura, Sitar,Tabla, Pakhawaz** Instruments & Study & Comparative Study of Teen Taal , Dadra, Kehrwa.

(B) Knowledge of Notation (National Anthem, Vande Mataram), Comparative Study of Course Raga.

Unit III :- fundamental of Folk Music

(A) Fundamental of Folk Music :-Intorduction , Origin , Structure.
(B) Study about folk music of Uttarakhand :-Sanskargeet, Bajuband & Jagar
(C) Study about Folk Instruments , Types of Instruments:-Tat, Suhir,Ghan, Avanadh.

Unit IV :- Practical/Viva Voce :-

(A) Ability to perform alankar & course Raga & Folk Song.
(B) Knowledge of Taal – Folk & Classical.

Recomnded Books

- Bhatkhande Sangeet Shastra- V. N. Bhatkhande
- Sangeet Visharad- Basant
- Kramik Pustak Mallika- Part I,II,III V. N. Bhatkhande
- Raag Vigyan – V. N. Patwardhan
- Sangeet Bodh – Sharad Chandra Pranjpayee
- Gadhwal ka lok Sangeet :-GovindChatak
- Gahdwal key loaknrityageet :- Dr. ShivanandNauityal
- Gadhwal Key Loak Geeton Mein Raag Raginya :- Dr. Madhuri Barthwal
- Dhunyal :- Govind Chatak

AMDSC-**5** **"भारतीय पारंपरिक संगीत"**

(अतिरिक्त बहु विषयक कौशल पाठ्यक्रम)

क्रेडिट: 2

एनईपी-2020 के तहत स्नातक कोर्स (III / IV सेमेस्टर) के लिए

उद्देश्य:

पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को भारतीय पारंपरिक संगीत (शास्त्रीय और लोक) के मूलभूत पहलुओं से अवगत कराना है। यह पाठ्यक्रम भारत की पारंपरिक संगीत प्रणाली के मूल विचारों और अवधारणाओं को प्रदान करता है। छात्रों को भारतीय शास्त्रीय और लोक संगीत के मूल सिद्धांत और व्याकरण संबंधी शब्दावली के बारे में जानकारी मिलेगी।

(नोट:- थ्योरी की तीन यूनिट (I-III) और प्रैक्टिकल की चौथी (IV) यूनिट होगी)

कोर्स राग :- बिलावल, यमन, भैरव, भूपाली

यूनिट I:-भारतीय संगीत के मूल सिद्धांत

(ए) निम्नलिखित का अध्ययन: -

संगीत, नाद और उसके गुण, श्रुति, स्वर, सप्तक, अलंकार, तान, ताल, आरोह, अवरोह, पकाड़, राग, जाति, वादी, संवादी, अनुवादी, विवादी।

(बी) रागों में अलंकार, स्वरमालिका और लक्षण गीत के पाठ्यक्रम राग और सैद्धांतिक ज्ञान का अध्ययन।

यूनिट II :- यंत्रों का बुनियादी ज्ञान और ताल का अध्ययन:-

ए) तानपुरा, सितार, तबला, पखावाज इंस्ट्रूमेंट्स का परिचय और संरचना और तीन ताल, दादरा, केहरवा का अध्ययन और तुलनात्मक अध्ययन।

बी) नोटेशन का ज्ञान (राष्ट्रगान, वंदे मातरम), कोर्स राग का तुलनात्मक अध्ययन।

यूनिट III:- लोक संगीत की मौलिकता

(ए) लोक संगीत का मूल: - परिचय, उत्पत्ति, संरचना।

(बी) उत्तराखंड के लोक संगीत के बारे में अध्ययन:-संस्कारगीत, बाजूबंद और जागर

(सी) लोक वाद्ययंत्रों के बारे में अध्ययन, उपकरणों के प्रकार: -तट, सुहिर, घन, अवनद।

यूनिट IV:- प्रैक्टिकल/ मौखिकी

(ए) अलंकार और पाठ्यक्रम राग और लोक गीत प्रदर्शन करने की क्षमता।

(बी) ताल का ज्ञान - लोक और शास्त्रीय।